ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 91-93

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

समकालीन कथा साहित्य में मानवाधिकार : संरक्षण एवं उन्नयन (कथाकार उदय प्रकाश के सन्दर्भ में)

1. कुसुम सिंह 2. प्रतिमा सिंह

1. एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.) भारत

2. शोध अध्येत्री एवं जे.आर.एफ., हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.) भारत

Received- 24.10.2019, Revised- 30.10.2019, Accepted - 05.11.2019 E-mail: vishnucktd@gmail.com

सारांश : *मानवाधिकार शब्द दो शब्दों के योग से बना है, मानव + अधिकार। मानवाधिकार की अवधारणा एक सुसभ्य की अवधारणा है, जिसमें किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति के समूह को उत्पीड़न और यातनाओं से युक्त जीवन–यापन का अधिकार प्राप्त हो।*

मानवाधिकार कोई नवीन अवधारणा नहीं है, बल्कि मानव समाज सभ्यता के आरम्भ से यह किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। कमी इसे प्राकृतिक अधिकार के रूप से तो कभी इसे मानव की गरिमा से जोड़कर देखा जाता रहा है। रचनात्मक के बिना में मानव का मौलिक स्वरूप विकृत हो जाता रहा है। वास्तविकता तो यह है कि रचनात्मकता ही मनुष्य की विशिष्टता या मनुष्यत्व का निर्माण करती है और उसे अन्य प्राणियों से भिन्न बनाती है। मानवाधिकार के अन्तर्गत अधिकार शब्द को परिभाषित करते हुए हेरॉल्ड लास्की ने कहा है–''अधिकार मानव जीवन की ऐसी परिस्थितियाँ जिनके बिना सामान्यता कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं कर सकता है।''

कुंजी शब्द – मानवाधिकार, समाज सभ्यता, प्राकृतिक अधिकार, गरिमा, उत्पीड़न, रचनात्मक, मौलिक स्वरूप।

मानव के प्रति मानव की संवेदना में आ रही निरन्तर कमी को वैश्विक स्तर पर अनुभव करते हुए जब पीड़ित को उसके अधिकार दिलाने की बात की जाती है तो प्रमुख रूप से दो मानवीय वर्ग उभर जाते हैं, जिसमें एक को शोषक तथा दूसरे को शोषित अथवा एक को शक्ति सम्पन्न और दूसरे को शक्तिहीन की संज्ञा मिल जाती है। वैश्विक सभ्यता के प्रारम्भ में शासक और शासित के मध्य का भेद इतना प्रबल था कि अत्याचारों एवं उत्पीड़न का विरोध करने का साहस नहीं किया जा सकता था।

यद्यपि हमारी ये अवधारणा समाज के परिप्रेक्ष्य में हैं किन्तु व्यैक्तिक परिप्रेक्ष्य में मानवधिकार की अवधारणा समाज की जैविक इकाई मनुष्य के अधिकारों से हैं। मानवाधिकार का मतलब सिर्फ व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता के क्षेत्र का विस्तार भर नहीं है, इसके कुछ सामाजिक पहलू भी हैं। आज वैश्वीकरण के युग में मानवीय चेहरे की जो बात होती है, वह मानवाधिकार की भावना से निकली है। यही वजह है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ गरीबी और विषमता को सम्बोधित करने के लिए नये–नये ड्रामा करती हैं। फलतः मानवाधिकार दिखावटी मानवीय चेहरे में सिकुड़ जाता है। अतः मानवाधिकार का वास्तविक अर्थ गलत मुनाफा, अन्याय पूर्ण ढंग से विकास, वैश्वीकरण की राह से मनुष्य के जीवन रोजगार और जल–जंगल–जमीन के अधिकार को छीनना कदापि नहीं हो सकता है।

मानवाधिकार के चिंतन–मनन एवं अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में हिन्दी साहित्य भी अछूता नहीं रहा है। समकालीन हिन्दी कथाकारों ने मानवाधिकार की भावना को केन्द्र में रखकर स्वस्थ और संवेदनशील साहित्य का सृजन किया है। इनमें प्रमुख हैं–अमरकान्त, कमलेश्वर, गोविन्द मिश्र, मिथलेश्वर आदि। इस क्रम के कहानीकार में मानवीय संवेदना के चितेरा उदय प्रकाश का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है।

उदय प्रकाश आज के लोकप्रिय एवं सशक्त कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ आज के समय और यथार्थ की सटीक भाषिक अभिव्यक्तियाँ हैं। आपने मानवाधिकार को केन्द्र बिन्दु में रखकर अनेक कहानियों का सृजन किया है, वह चाहे बाल अधिकार हो, स्त्री के अधिक हों या मजदूर वर्ग के अधिकार हों।

उदय प्रकाश की कहानी 'टेपचू' मानवाधिकार के हनन की ज्वलंत एवं संवेदनशील कहानी है। इस कहानी के द्वारा शोषक व शोषिक वर्ग के सम्बन्धों कथा को चरित्र 'टेपचू' के माध्यम से उदय प्रकाश ने बहुत संवेदनशीलता से बुना है। यह कहानी टेपचू नाम के व्यक्ति की नहीं हैं, अपितु सर्वहारा वर्ग की कहानी है। जिनका प्रतिनिधित्व टेपचू करता है। टेपचू मजदूर वर्ग से है। यह वह वर्ग है जो समाज में हर तरह के अत्याचार व जुर्म सहता है, पर जीवित रहता है। यह एक जिन्न की भांति है जो कभी नहीं मरता। टेपचू बचपन से जवानी तक हर जुल्म सहता है लेकिन कभी हारता नहीं है। जहाँ जुल्म और अत्याचार है वहीं टेपचू भी मौजूद है। वह अन्याय से डर कर दम तोड़ने वालों में से नहीं है वरन् उसका निर्भीकता से सामना करने वालों में से है–''पसीने, मेहनत, भूख, अपमान, दुर्घटनाओं और मुसीबतों की विकट धार को चीर कर वह निकल आया

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

था। कभी उसके चेहरे पर पस्त होने, टूटने या हार जाने का गम नहीं उभरा।'' टेपचू हर परिस्थिति में अपने मानवाधिकार के लिए लड़ने के लिए निर्भीकता से तत्पर खड़ा रहता था। इस प्रकार कहानीकार अपने कथा नायक के संघर्ष के माध्यम से एक ऐसे सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना प्रस्तुत करता है जहाँ मानव–मानव में जाति, वर्ग, धर्म आदि की दीवार न हो।

'मोहनदास' कबीर में कबीर पंथी मोहनदास की लड़ाई अपने मानवाधिकार, अस्मिता और अस्तित्व दोनों को बचाने की संघर्ष गाथा है। मोहनदास गरीब, दलित युवक है जो अपने परिश्रम और विद्वता के बल पर बी.ए. में प्रथम श्रेणी में पास होता है। अखबारों में उसकी फोटो छपती हैं, उसे एक पहचान मिलती है किन्तु नौकरी नहीं मिलती। क्योंकि उसके पास सम्पर्क और सिफारिश नहीं है। घूस देने के लिए धन नहीं है। जल्द ही वह जान जाता है कि–''स्कूल, कॉलेज के बाहर की असली जिन्दगी दरअसल खेल का ऐसा मैदान है, जहाँ वहीं गोल बनाता है जिसके पास दूसरों को लंगड़ी मारने की ताकत होती है।''

मोहनदास की पत्नी कस्तूरी आज की कर्मठ स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे अपनी शक्ति व क्षमता का पूरा आभास है। मोहनदास की शिक्षा के लिए वह आस–पास मजदूरी करके पैसा कमाती है। वह परिश्रम करके जीना चाहती है, परन्तु खुद को किसी के भोग की वस्तु नहीं बनने देती है। कस्तूरी भी यह जानती है कि ''गांव के ठकुरान–बंभनान, शोहदों की नजरें गिद्ध की तरह उस पर गड़ी हुई हैं।'' मानवाधिकार की अवधारणा एक सुसभ्य समाज की अवधारणा है, जिसमें किसी भी व्यक्ति या व्यक्ति के समूह को उत्पीड़न और योतनाओं से मुक्ति जीवन–यापन का अधिकार प्राप्त होता है।

'टेपचू' कहानी में आर्थिक संघर्षों के साथ फिरोजा को वैधव्य के अकेलेपन से जुझते हुए अस्मिता संरक्षण की लड़ाई लड़नी थी। स्त्री–अस्तित्व संरक्षण ही संवेदनशील स्थिति को उजागर कर सचेष्ट कहानीकार उदय प्रकाश अनेकानेक सवाल खड़ा करते हैं। समाज के इसी कोढ़ग्रस्त परिस्थिति को उदय प्रकाश ने अपनी कहानी में इस रूप में प्रस्तुत किया है–''फिरोजा को अकेले जानकर गाँव के कई खाते–पीते घरानों के छोकरों ने उसे पकड़ने की कोशिश की लेकिन टेपचू हर वक्त अपनी माँ के पास कवच की तरह होता है।'' मानव अधिकार किसी भी मानव विशेष के अस्तित्व के लिए अत्यावश्यक है। आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष यह एक समस्या के रूप में उपस्थित हुआ है। मानव अपने इन्हीं अधिकारों के लिए उचित या अनुचित रूप से एक इसी से जुड़ा रहा है।

इस प्रकार उदय प्रकाश ने अपनी कहानियों में गरीबों और दलितों के मानवाधिकार की संघर्ष–गाथा प्रस्तुत की है। लेखक का स्वयं का जीवन संघर्षशील रहा है इसीलिए उनकी कहानियों में आम आदमी के अधिकार, वेदना, क्रोध और क्षुब्धावस्था का गहराई से चित्रांकन हुआ है। इस सन्दर्भ में उनकी 'पुतला' कहानी को देखा जा सकता है–'किशुन' अपने पिता की ली गई उधार रकम कैसे चुकाता है और चौधरी भीखमदास कितनी निर्दयता से दिन–रात उससे काम करवाते हैं, परिणामतः–'बीड़ी का कश खीचते ही कुकुरखांसी का दौरा पड़ जाता है। फेफड़ा उलट जाता था, आंते गुड़ी–मुड़ी हो जाती थीं। खांसी का दौरा बढ़ता ही जाता था कई बार तो बिगड़े हुए इंजन की तरह उसका शरीर देर–देर तक खांसी के झटकों में थरथराता रह जाता था फिर भी वह निरंतर अपने कर्य में लगा रहता था।'' इसी प्रकार उनकी 'हीरालाल का भूत' कहानी में हीरालाल के गरीब व दलित होने के कारण ठाकुर साहब और उनका पूरा परिवार हीरालाल से बेहिसाब काम लेते हैं। हीरालाल यह सब चुपचाप सहन करता है और अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। हीरालाल के प्रति ठाकुर साहब की सारी संवेदनायें शून्य हो जाती हैं–''हीरालाल सूखी लकड़ी का चलता–फिरता ढांचा रह गया था।'' व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार की अवधारणा समाज की जैविक इकाई व्यक्ति के अधिकारों से है। मानव जाति के लिए मानवाधिकार का व्यापक और असीम महत्व है। इसीलिए इसे कभी–कभी मूलाधिकार, आधारभूत अधिकार, अंर्तनिहित अधिकार नैसर्गिक अधिकार तथा मानवीय जाति के लिए मानवाधिकारों का व्यापक और असीम महत्व है।

वस्तुतः उदय प्रकाश की कहानियाँ समकालीन समाज का जीवंत दस्तावेज है। इनकी कहानियों में समाज अपनी समूची विशेषताओं, विद्रुपताओं, संवेदनाओं के साथ उजागर होता है। यह नृविज्ञानियों, सामाजिक चिंतकों व संगठनों, सरकारों के लिए जितना ज्वलंत व कठिन है उतना ही साहित्य एवं साहित्यकारों के लिए था। मानवाधिकारों के संरक्षण एवं उन्नयन की दिशा में आज समकालीन कथाकार प्रतिबद्ध है परिणामतः कथासाहित्य के केन्द्र में स्त्री वदलित के साथ ही आदिवासी समाज, कृषक वर्ग, दिव्यांग, वृद्धजन, अप्रवासी एवं किन्नर समुदाय भी विद्यमान है जो साहित्य को सोद्देश्यता प्रदान कर रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरॉल्ड जे.लॉस्की, मानवाधिकार, मैकमिलन, लंदन प्रकाशन, संस्करण 1940, पृ.सं.07।
2. उदय प्रकाश, टेपचू, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

संस्करण 2014, पृ.सं.109।

3. उदय प्रकाश, मोहनदास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2013, पृ.सं.14।

4. उदय प्रकाशन, मोहनदास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2013, पृ.सं.71।

5. उदय प्रकाश, टेपचू, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृ.सं.101।

6. उदय प्रकाश, पुतला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृ.सं.80।

7. उदय प्रकाश, हीरालाल का भूत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011, पृ.सं.104।

*****